SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-3 July - September 2026 E-ISSN: 2584-2900

विश्वगुरु भारत की आर्थिक शक्ति: अवसर, चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

राम मिलन द्विवेदी

सह-प्राध्यापक, (अर्थशास्त्र विभाग)

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्विक अर्थव्यवस्था तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। तकनीकी नवाचार, डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित विकास, वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं का पुनर्गठन तथा भू-राजनीतिक परिवर्तनों ने विश्व अर्थव्यवस्था की दिशा को नया स्वरूप प्रदान किया है। इस परिवर्तित परिदृश्य में भारत विश्व की प्रमुख उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है। विशाल जनसंख्या, युवा कार्यबल, तीव्र आर्थिक विकास, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, उद्यमिता, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ती रणनीतिक भूमिका ने भारत को आर्थिक नेतृत्व की दिशा में सशक्त आधार प्रदान किया है।

"विश्वगुरु भारत" की अवधारणा केवल सांस्कृतिक या आध्यात्मिक नेतृत्व का प्रतीक नहीं है, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, नवाचार, आर्थिक समृद्धि, सुशासन तथा मानव-केंद्रित विकास के समन्वित स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। यदि भारत सतत विकास, समावेशी आर्थिक नीतियों, उच्च उत्पादकता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार तथा वैश्विक साझेदारी को निरंतर प्रोत्साहित करता है, तो वह भविष्य की विश्व अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

यह शोधपत्र भारत की आर्थिक शक्ति के प्रमुख आधारों, उपलब्ध अवसरों, विद्यमान चुनौतियों तथा आवश्यक रणनीतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों, सरकारी प्रकाशनों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों एवं प्रासंगिक शोध साहित्य पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य केवल भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति का वर्णन करना नहीं,

बल्कि यह विश्लेषण करना भी है कि किन नीतिगत एवं संस्थागत सुधारों के माध्यम से भारत वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दिशा में स्थायी एवं समावेशी प्रगति कर सकता है।

प्रमुख शब्द

विश्वगुरु भारत, आर्थिक शक्ति, वैश्विक नेतृत्व, विकसित भारत 2047, डिजिटल अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भर भारत, समावेशी विकास, सतत विकास।

परिचय

भारत को प्राचीन काल से ही ज्ञान, व्यापार, विज्ञान, दर्शन तथा सांस्कृतिक समृद्धि का केंद्र माना जाता रहा है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने विश्वभर के विद्यार्थियों को आकर्षित किया। भारतीय गणित, आयुर्वेद, धातुकर्म, खगोल विज्ञान और समुद्री व्यापार ने भारत को वैश्विक प्रतिष्ठा दिलाई। इसी कारण भारत को "विश्वगुरु" की संज्ञा दी जाती रही है। आधुनिक युग में इस अवधारणा का अर्थ केवल सांस्कृतिक श्रेष्ठता नहीं, बल्कि आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और नीतिगत नेतृत्व से भी जुड़ गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने नियोजित आर्थिक विकास का मार्ग अपनाया। प्रारंभिक दशकों में सार्वजनिक क्षेत्र, कृषि विकास तथा औद्योगिकीकरण पर बल दिया गया। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति तथा बैंक राष्ट्रीयकरण जैसी नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को स्थिर आधार प्रदान किया। इसके बावजूद 1980 के दशक के अंत तक भुगतान संतुलन संकट, विदेशी मुद्रा भंडार की कमी तथा धीमी आर्थिक वृद्धि जैसी चुनौतियाँ सामने आईं। वर्ष 1991 भारतीय आर्थिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को नई दिशा प्रदान की। विदेशी निवेश को प्रोत्साहन, औद्योगिक नियंत्रणों में कमी, व्यापार उदारीकरण तथा वित्तीय क्षेत्र में सुधारों के परिणामस्वरूप भारत ने उच्च आर्थिक विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की। सेवा क्षेत्र विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, बैंकिंग तथा वित्तीय सेवाओं में भारत ने वैश्विक पहचान बनाई।

इक्कीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में भारत ने डिजिटल परिवर्तन की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाए। जनधन योजना, आधार, मोबाइल प्रौद्योगिकी, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), डिजिटल भुगतान प्रणाली, UPI, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों ने आर्थिक गतिविधियों को नई गति प्रदान की। इन पहलों ने न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया, बल्कि शासन प्रणाली को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और कुशल बनाया। आज भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देशों में सम्मिलित है। यह जनसांख्यिकीय लाभांश भारत की सबसे बड़ी आर्थिक शक्तियों में से एक है। यदि इस युवा शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, तो भारत आने वाले दशकों में वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति कर सकता है। वैश्विक स्तर पर भी भारत की भूमिका निरंतर सुदृढ़ हो रही है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सहयोग तथा डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना जैसे विषयों पर भारत की सक्रिय भागीदारी ने उसकी वैश्विक साख को बढ़ाया है। भारत विकासशील देशों की आवाज़ को प्रमुखता से उठाने वाले देशों में अग्रणी है तथा वैश्विक दक्षिण के हितों के प्रतिनिधि के रूप में भी उसकी भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता है।

कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र तीनों ही आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सेवा क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में योगदान सर्वाधिक है, जबकि कृषि आज भी करोड़ों लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत है। दूसरी ओर विनिर्माण क्षेत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI), औद्योगिक गलियारे, लॉजिस्टिक सुधार तथा निर्यात संवर्धन जैसी अनेक पहलें की जा रही हैं।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना भारत की एक विशिष्ट उपलब्धि है। आधार, UPI, डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस और डिजिटल सेवाओं ने आर्थिक गतिविधियों की गति बढ़ाई है तथा लेन-देन की लागत को कम किया है। इससे छोटे उद्यमों, ग्रामीण क्षेत्रों तथा महिलाओं की वित्तीय भागीदारी में भी वृद्धि हुई है। भारत ने अक्षय ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक वाहन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अपनी

उपस्थिति मजबूत की है। ये क्षेत्र भविष्य की अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार बन सकते हैं और भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बढ़त दिला सकते हैं। हालाँकि, इन उपलब्धियों के बावजूद भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। बेरोजगारी, कौशल असमानता, आय एवं क्षेत्रीय विषमताएँ, कृषि उत्पादकता, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण का दबाव, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताएँ दीर्घकालिक विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। यदि इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान किया जाता है, तो भारत की आर्थिक प्रगति अधिक समावेशी, संतुलित एवं टिकाऊ बन सकती है।

यह शोधपत्र भारत की आर्थिक शक्ति के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि किन अवसरों का उपयोग करते हुए और किन चुनौतियों का समाधान करके भारत भविष्य की विश्व अर्थव्यवस्था का प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता बन सकता है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करने का प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तुत अध्ययन में भारत की आर्थिक शक्ति, वैश्विक आर्थिक नेतृत्व, आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा विकसित भारत-2047 से संबंधित प्रमुख राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है।

एडम स्मिथ (1776) ने अपनी प्रसिद्ध कृति The Wealth of Nations में आर्थिक समृद्धि का आधार श्रम-विभाजन, उत्पादकता तथा मुक्त बाजार व्यवस्था को माना। उनका मत था कि उत्पादन क्षमता और प्रतिस्पर्धा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति के मूल आधार हैं। आधुनिक भारत के आर्थिक सुधारों तथा प्रतिस्पर्धी बाजार व्यवस्था को समझने में यह दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है।

डेविड रिकार्डो (1817) ने Principles of Political Economy and Taxation में तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उनके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को उन वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता विकसित करनी चाहिए जिनमें उसे तुलनात्मक लाभ प्राप्त हो। सूचना

प्रौद्योगिकी, औषधि उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता इस सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता को दर्शाती है।

जोसेफ शुम्पीटर (1934) ने आर्थिक विकास में नवाचार, तकनीकी परिवर्तन तथा उद्यमिता को प्रमुख प्रेरक शक्ति माना। वर्तमान भारत में स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल नवाचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा अनुसंधान आधारित उद्योगों के विकास को उनके सिद्धांत के आलोक में समझा जा सकता है।

अमर्त्य सेन (1999) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Development as Freedom में स्पष्ट किया कि विकास का वास्तविक उद्देश्य केवल आय वृद्धि नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय, समान अवसर तथा मानवीय क्षमताओं का विस्तार है। उनके अनुसार समावेशी विकास ही दीर्घकालिक आर्थिक समृद्धि का आधार है। भारत की विकास नीतियों में यह दृष्टिकोण विशेष महत्व रखता है।

जगदीश भगवती (2004) ने उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा निर्यात-आधारित विकास को भारत की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार माना। उनके अनुसार आर्थिक सुधारों से निवेश, रोजगार तथा उत्पादकता में वृद्धि होती है, जिससे दीर्घकालीन विकास को गति मिलती है।

रघुराम राजन (2015) ने अपनी पुस्तक Saving Capitalism from the Capitalists तथा अन्य लेखों में वित्तीय संस्थाओं की मजबूती, बैंकिंग सुधार, संस्थागत पारदर्शिता तथा संतुलित विकास को आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक बताया। उनका मत है कि सतत आर्थिक विकास के लिए मजबूत वित्तीय व्यवस्था अनिवार्य है।

विश्व बैंक (2025) ने अपनी रिपोर्ट Becoming a High-Income Economy in a Generation में उल्लेख किया है कि भारत को वर्ष 2047 तक उच्च-आय (High-Income) अर्थव्यवस्था बनने के लिए अगले दो दशकों तक औसतन लगभग 7.8% वार्षिक आर्थिक वृद्धि बनाए रखनी होगी। रिपोर्ट के अनुसार श्रम बाज़ार सुधार, विनिर्माण विस्तार, महिला श्रम भागीदारी, मानव पूंजी और संस्थागत सुधार भारत की दीर्घकालिक आर्थिक प्रगति के प्रमुख आधार होंगे।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF, 2025) की भारत संबंधी Article IV Consultation में कहा गया है कि भारत विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में बना हुआ है। रिपोर्ट में वित्तीय स्थिरता, डिजिटल परिवर्तन, सेवा क्षेत्र की मजबूती तथा संरचनात्मक सुधारों को भारत की आर्थिक शक्ति के प्रमुख कारक माना गया है। साथ ही रोजगार सृजन, उत्पादकता वृद्धि और व्यापार सुधारों को भविष्य की प्राथमिकताएँ बताया गया है।

नीति आयोग (Viksit Bharat 2047) के विभिन्न नीति दस्तावेज़ों में विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विनिर्माण, नवाचार, कौशल विकास, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित ऊर्जा तथा डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना को आर्थिक परिवर्तन के प्रमुख स्तंभ बताया गया है। इन दस्तावेज़ों में समावेशी एवं सतत विकास पर विशेष बल दिया गया है।

भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण (2025-26) में भारत को विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बताया गया है। सर्वेक्षण के अनुसार सार्वजनिक पूंजीगत व्यय, मजबूत बैंकिंग प्रणाली, सेवा निर्यात, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा घरेलू मांग भारत की आर्थिक वृद्धि के प्रमुख प्रेरक तत्व हैं।

हाल के शोधों में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि भारत की दीर्घकालिक आर्थिक प्रगति केवल उच्च GDP वृद्धि पर निर्भर नहीं करेगी, बल्कि मानव पूंजी, अनुसंधान एवं विकास (R&D), तकनीकी नवाचार, जलवायु-अनुकूल विकास तथा संस्थागत गुणवत्ता में सुधार पर भी समान रूप से निर्भर करेगी।

शोध-अंतर

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि अधिकांश अध्ययन भारत की आर्थिक वृद्धि, विकसित भारत-2047, डिजिटल परिवर्तन अथवा संरचनात्मक सुधारों पर केंद्रित हैं। किंतु "विश्वगुरु भारत की आर्थिक शक्ति: अवसर, चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ" विषय पर आर्थिक, नीतिगत, तकनीकी एवं वैश्विक नेतृत्व के सभी आयामों को एकीकृत करते हुए समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतर को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारत की वर्तमान आर्थिक शक्ति एवं वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना।
2. भारत के आर्थिक विकास के समक्ष उपलब्ध प्रमुख अवसरों एवं चुनौतियों का अध्ययन करना।
3. भारत को वैश्विक आर्थिक नेतृत्व (विश्वगुरु) की दिशा में अग्रसर करने हेतु उपयुक्त रणनीतियों का विश्लेषण एवं सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। आँकड़ों के स्रोतों में भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण, केंद्रीय बजट, भारतीय रिज़र्व बैंक की रिपोर्टें, नीति आयोग के दस्तावेज, IMF, World Bank, UNDP, OECD, UNCTAD, विभिन्न शोध पत्रिकाएँ, पुस्तकें तथा प्रामाणिक ऑनलाइन स्रोत सम्मिलित हैं। संकलित आँकड़ों का तुलनात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए भारत की आर्थिक स्थिति, अवसरों, चुनौतियों तथा भावी रणनीतियों का मूल्यांकन किया गया है।

भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति

भारत वर्तमान समय में विश्व की सबसे तेज़ी से विकसित होती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक महामारी, रूस-यूक्रेन संघर्ष, ऊर्जा संकट, मुद्रास्फीति तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान जैसी चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था ने उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित किया है। घरेलू मांग, सार्वजनिक पूंजीगत व्यय, सेवा क्षेत्र, डिजिटल अर्थव्यवस्था तथा संरचनात्मक सुधारों ने भारत की विकास यात्रा को गति प्रदान की है। आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के अनुसार भारत की मध्यम अवधि की विकास क्षमता लगभग 7 प्रतिशत

आँकी गई है तथा 2025-26 में वास्तविक GDP वृद्धि 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान व्यक्त किया गया है।

तालिका क्रमांक 01 :-भारत के प्रमुख व्यापक आर्थिक संकेतक

संकेतक	**2023-24**	**25-2024**	**26-2025**
वास्तविक GDP वृद्धि दर प्रतिशत	8.2	6.5	7.4
प्रति व्यक्ति आय रूपये में वर्तमान मूल्य	2.14 लाख	2.35 लाख	2.54 लाख
CPI मुद्रास्फीति प्रतिशत	5.4	6.4	4.5
बेरोज़गारी दर (PLFS, प्रतिशत)	5.0	4.9	4.8
विदेशी मुद्रा भंडार (अरब US$	646	640	681
FDI प्रवाह (अरब US$)	71	81	वृद्धि की प्रवृत्ति
वस्तु एवं सेवा निर्यात अरब)US$)	778	820	वृद्धि की प्रवृत्ति

स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 एवं 2025-26, RBI, MOSPI.

सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर का विश्लेषण- सकल घरेलू उत्पाद किसी भी देश की आर्थिक प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण सूचक माना जाता है। वर्ष 2023-24 में भारत की वास्तविक GDP की वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही, जो प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक थी। वर्ष 2024-25 में वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं तथा बाहरी मांग में कमी के कारण वृद्धि दर 6.5 प्रतिशत रही, फिर भी भारत विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहा। आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के अनुसार 2026-27 में विकास दर पुनः 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जिसका प्रमुख आधार घरेलू मांग, सार्वजनिक निवेश तथा सेवा क्षेत्र का विस्तार है।

तालिका क्रमांक 02:-भारत की GDP वृद्धि दर का तुलनात्मक विवरण

वर्ष	GDP वृद्धि दर प्रतिशत में
2023-24	8.2
2024-25	8.2
2025-26	7.4

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि भारत की आर्थिक वृद्धि में अल्पकालिक उतार-चढ़ाव के बावजूद समग्र प्रवृत्ति सकारात्मक बनी हुई है। सार्वजनिक पूंजीगत व्यय, निजी उपभोग, सेवा क्षेत्र का विस्तार तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था ने विकास दर को सहारा दिया है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE) का GDP में हिस्सा 61.5% तक पहुँचा, जो घरेलू मांग की मजबूती को दर्शाता है।

प्रति व्यक्ति आय

प्रति व्यक्ति आय किसी देश के नागरिकों के औसत आर्थिक स्तर का महत्वपूर्ण सूचक है। भारत में पिछले वर्षों के दौरान प्रति व्यक्ति आय में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है। आय में वृद्धि का अर्थ है कि उत्पादन, निवेश तथा रोजगार के अवसरों का विस्तार हुआ है, हालांकि आय वितरण की असमानता अभी भी एक चुनौती बनी हुई है।

तालिका क्रमांक- 03 : प्रति व्यक्ति आय

वर्ष	प्रति व्यक्ति आय (रुपये लाख में)
2023-24	2.14
2024-25	2.35
2025-26	2.54

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था की सकारात्मक दिशा को दर्शाती है। फिर भी इस वृद्धि का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचना आवश्यक है। इसलिए समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण रोजगार तथा कौशल विकास पर विशेष बल देना होगा।

मुद्रास्फीति- मुद्रास्फीति किसी भी अर्थव्यवस्था की स्थिरता का प्रमुख संकेतक है। वर्ष 2023-24 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित मुद्रास्फीति लगभग 5.4 प्रतिशत रही, जबकि 2024-25 में यह घटकर लगभग 4.6 प्रतिशत हो गई। खाद्य पदार्थों की उपलब्धता, मौद्रिक नीति तथा आपूर्ति प्रबंधन ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तालिका क्रमांक 04 :-मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति

वर्ष	CPI मुद्रा स्फीति रुपये में
2023-24	5.4
2024-25	4.6
2025-26	4.5

उपरोक्त तालिका से स्पपष्टए है कि तगातार मुद्रास्फींति मे लगातार घट रही है। मुद्रास्फीति में कमी से उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति बढ़ती है तथा निवेश और उपभोग को प्रोत्साहन मिलता है। हालांकि खाद्य एवं ऊर्जा कीमतों में वैश्विक उतार-चढ़ाव भविष्य में मुद्रास्फीति पर दबाव बना सकते हैं।

बेरोज़गारी

भारत की सबसे बड़ी चुनौती गुणवत्तापूर्ण रोजगार का सृजन है। पिछले कुछ वर्षों में रोजगार की स्थिति में सुधार हुआ है किंतु युवा बेरोज़गारी तथा कौशल असंगति अभी भी प्रमुख समस्याएँ हैं।

तालिका क्रमांक- 05 : बेरोज़गारी दर

वर्ष	बेरोजगारी प्रतिशत में
2023-24	5.0
2024-25	4.9
2025-26	4.8

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने से पता चलता है कि बेरोज़गारी में धीरेधीरे कमी - देखी जा रही है, परंतु रोजगार की गुणवत्ता, महिला श्रम भागीदारी तथा औपचारिक रोजगार का विस्तार भविष्य की नीति का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

विदेशी मुद्रा भंडार

विदेशी मुद्रा भंडार किसी देश की बाह्य आर्थिक मजबूती का प्रमुख संकेतक है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार आयात भुगतान, विनिमय दर की स्थिरता तथा बाहरी झटकों से सुरक्षा प्रदान करता है।

तालिका क्रमांक- 06: भारतका विदेशी मुद्रा भंडार

वर्ष	भंडार अरब)US$)
2023-24	646
2024-25	640
2025-26	681

विदेशी मुद्रा भंडार का उच्च स्तर भारत की व्यापक आर्थिक स्थिरता और निवेशकों के विश्वास को मजबूत करता है। यह रुपये की विनिमय दर को स्थिर रखने तथा बाह्य भुगतान दायित्वों को पूरा करने में सहायक है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भारत की औद्योगिक प्रगति, रोजगार सृजन तथा तकनीकी हस्तांतरण का महत्वपूर्ण स्रोत है। इलेक्ट्रॉनिक्स, विनिर्माण, सेवाएँ, नवीकरणीय ऊर्जा तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था में निवेश निरंतर बढ़ रहा है।

तालिका क्रमांक- 07: प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

वर्ष	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (अरब US$ में)
2023-24	71
2024-25	81
2025-26	वृद्धि की प्रवृत्ति

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि यह दर्शाती है कि भारत वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षक गंतव्य बना हुआ है। निवेश-अनुकूल नीतियाँ, विशाल बाजार तथा राजनीतिक स्थिरता इसके प्रमुख कारण हैं।

निर्यात एवं आयात- भारत के विदेशी व्यापार में सेवा निर्यात का योगदान निरंतर बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग वस्तुएँ तथा व्यावसायिक सेवाएँ निर्यात वृद्धि के प्रमुख आधार हैं।

तालिका क्रमांक- 08 : भारत का विदेशी व्यापार

वर्ष	निर्यात (अरब US$)	आयात (अरब US$)
2023-24	778	855
2024-25	820	900
2025-26	वृद्धि की प्रवृत्ति	वृद्धि की प्रवृत्ति

भारत का व्यापार लगातार विस्तार कर रहा है। यद्यपि वस्तु व्यापार में घाटा बना रहता है, लेकिन सेवा निर्यात और प्रवासी भारतीयों से प्राप्त प्रेषण चालू खाते को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका क्रमांक- 09 : भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख क्षेत्रों का योगदान

क्षेत्र	कुल घरेलू उत्पाद में योगदान प्रतिशत में	प्रमुख विशेषता
कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र	17-18	खाद्य सुरक्षा एवं रोजगार
उद्योग	27-28	विनिर्माण एवं आधारभूत संरचना
सेवा क्षेत्र	54-55	IT, बैंकिंग, पर्यटन, संचार एवं व्यापार

तालिका से स्पष्ट है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक है। सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएँ तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था ने सेवा क्षेत्र को नई गति प्रदान की है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र को PLI योजनाओं एवं पूंजीगत निवेश से प्रोत्साहन मिला है।

भारत के समक्ष प्रमुख आर्थिक चुनौतियाँ- भारत की आर्थिक संभावनाएँ व्यापक हैं, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी मौजूद हैं।

1. रोजगार सृजन की चुनौती भारत की युवा आबादी एक अवसर भी है और चुनौती भी। पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार उपलब्ध कराना आवश्यक है।
2. कौशल अंतराल तेजी से बदलती तकनीक के अनुरूप युवाओं को कौशल प्रदान करना आवश्यक है।
3. आय एवं क्षेत्रीय असमानता आर्थिक विकास का लाभ सभी वर्गों और क्षेत्रों तक समान रूप से पहुँचाना आवश्यक है।
4. कृषि क्षेत्र की समस्याएँ कृषि उत्पादकता, किसानों की आय, जल संकट और बाजार व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है।

5. पर्यावरणीय चुनौतियाँ जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा भविष्य की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण मुद्दे हैं

I. भारत के आर्थिक नेतृत्व हेतु भावी रणनीतियाँ - भारत को विश्व की अग्रणी आर्थिक शक्ति बनाने के लिए केवल उच्च आर्थिक वृद्धि दर पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि समावेशी, नवाचार-आधारित एवं सतत विकास मॉडल को अपनाना आवश्यक होगा। निम्नलिखित रणनीतियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं–

II. मानव पूंजी एवं कौशल विकास - भारत विश्व की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक है। यदि इस जनसांख्यिकीय लाभांश को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं डिजिटल कौशल से जोड़ा जाए, तो यह आर्थिक विकास का सबसे बड़ा इंजन बन सकता है। विश्वविद्यालयों, उद्योगों तथा कौशल विकास संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना समय की आवश्यकता है। हाल के राष्ट्रीय विमर्शों में भी विश्वविद्यालयों को विकसित भारत के निर्माण का प्रमुख आधार माना गया है।

III. अनुसंधान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, सेमीकंडक्टर, जैव प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष विज्ञान तथा साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना आवश्यक है। अनुसंधान एवं विकास (R&D) पर सार्वजनिक एवं निजी निवेश बढ़ाकर भारत वैश्विक तकनीकी नेतृत्व की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

IV. आधारभूत संरचना का सुदृढ़ीकरण- सड़क, रेल, बंदरगाह, हवाई अड्डे, लॉजिस्टिक्स, ऊर्जा तथा डिजिटल अवसंरचना में निरंतर निवेश आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाता है। आर्थिक सर्वेक्षण ने भी विकसित भारत 2047 के लिए सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों द्वारा आधारभूत संरचना में निवेश को आवश्यक बताया है।

V. विनिर्माण एवं निर्यात को प्रोत्साहन- भारत को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी। उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (PLI), 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' तथा निर्यातोन्मुख औद्योगिक नीति को और अधिक प्रभावी बनाना आवश्यक है।

VI. कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण- कृषि में डिजिटल तकनीक, जैविक खेती, कृषि प्रसंस्करण, भंडारण, मूल्य संवर्धन तथा किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को बढ़ावा देना आवश्यक है। ग्रामीण अवसंरचना एवं ग्रामीण उद्यमिता में निवेश समावेशी विकास को गति देगा। आर्थिक सर्वेक्षण ने भी ग्रामीण जीवन-स्तर, डिजिटल पहुँच तथा ग्रामीण अवसंरचना को विकसित भारत के महत्वपूर्ण आधारों में शामिल किया है।

VII. हरित एवं सतत विकास- नवीकरणीय ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक वाहन, कार्बन उत्सर्जन में कमी तथा परिपत्र अर्थव्यवस्था को आर्थिक नीति का अभिन्न अंग बनाना होगा। इससे आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकेगा।

VIII. सुशासन एवं संस्थागत सुधार- पारदर्शी प्रशासन, ई-गवर्नेंस, भ्रष्टाचार नियंत्रण, न्यायिक दक्षता, नियामकीय सुधार तथा निवेश-अनुकूल वातावरण आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 ने भी राज्य क्षमता, नियामकीय सुधार तथा उद्यमशील नीति-निर्माण को विकसित भारत की दिशा में महत्वपूर्ण बताया है।

प्रमुख सुझाव-

1. शिक्षा एवं अनुसंधान पर सार्वजनिक व्यय में वृद्धि की जाए।
2. कौशल विकास को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाए।
3. MSME एवं स्टार्टअप क्षेत्र को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जाए।
4. महिला श्रम भागीदारी एवं उद्यमिता को प्रोत्साहित किया जाए।
5. कृषि में तकनीकी नवाचार एवं मूल्य संवर्धन को बढ़ावा दिया जाए।
6. हरित ऊर्जा एवं डिजिटल अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ाया जाए।
7. निर्यात प्रतिस्पर्धा बढ़ाने हेतु लॉजिस्टिक्स लागत कम की जाए।
8. संघ एवं राज्यों के मध्य सहकारी संघवाद को और सुदृढ़ किया जाए।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति मजबूत व्यापक आर्थिक आधारों पर आधारित है। उच्च विकास दर, बढ़ती प्रति व्यक्ति आय, नियंत्रित मुद्रास्फीति,

पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार, बढ़ता प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तथा विस्तृत निर्यात क्षमता भारत को भविष्य की वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। साथ ही रोजगार सृजन, आय असमानता, कौशल विकास तथा निर्यात विविधीकरण जैसे क्षेत्रों में निरंतर सुधार भारत के दीर्घकालिक आर्थिक नेतृत्व के लिए आवश्यक होंगे। हाल के वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था ने वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित किया है। GDP वृद्धि दर, विदेशी मुद्रा भंडार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, सेवा क्षेत्र का विस्तार तथा डिजिटल भुगतान प्रणाली में हुई प्रगति भारत की आर्थिक मजबूती को दर्शाती है। विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएँ, फार्मास्यूटिकल्स, स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना ने भारत को वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत के पास विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने तथा वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त करने की पर्याप्त क्षमता है। किंतु इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल आर्थिक वृद्धि दर में वृद्धि पर्याप्त नहीं होगी, बल्कि समावेशी एवं सतत विकास मॉडल को अपनाना आवश्यक होगा। रोजगार सृजन, कौशल विकास, आय असमानता में कमी, कृषि क्षेत्र का आधुनिकीकरण, विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार तथा अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देना भारत की प्रमुख प्राथमिकताएँ होनी चाहिए। भारत की आर्थिक नेतृत्व क्षमता को मजबूत करने के लिए मानव पूंजी निर्माण, तकनीकी आत्मनिर्भरता, हरित अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना विकास तथा वैश्विक आर्थिक सहयोग को रणनीतिक महत्व देना होगा। शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों, उद्योगों तथा सरकार के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित करके भारत ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि "विश्वगुरु भारत" की अवधारणा केवल सांस्कृतिक या आध्यात्मिक नेतृत्व तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक समृद्धि, वैज्ञानिक प्रगति, सामाजिक समावेशन और वैश्विक उत्तरदायित्व के समन्वित स्वरूप पर आधारित है। यदि भारत अपनी आर्थिक नीतियों में निरंतरता, नवाचार, समावेशिता और सतत विकास को प्राथमिकता देता है,

तो वह न केवल विश्व की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में शामिल होगा, बल्कि 21वीं शताब्दी में एक प्रभावशाली वैश्विक आर्थिक नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

संदर्भ ग्रंथ-

1. अग्रवाल, ए. एन. भारतीय अर्थव्यवस्था: विकास एवं नियोजन की समस्याएँ। नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स, 2019 (36वाँ संशोधित संस्करण)।
2. दत्त, गौरव एवं नाग, बिस्वजीत. दत्त एवं सुन्दरम की भारतीय अर्थव्यवस्था (हिंदी संस्करण)। नई दिल्ली: एस. चाँद पब्लिशिंग, 2024 (56वाँ संस्करण)।
3. मिश्र, एस. के., पुरी, वी. के. एवं गर्ग, भारतीय अर्थव्यवस्था (हिंदी संस्करण)। मुंबई: हिमालय पब्लिशिंग हाउस, 2026 (नवीनतम संस्करण)।
4. भारत सरकार, वित्त मंत्रालय। आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 (हिंदी संस्करण)। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2025।
5. भारत सरकार, वित्त मंत्रालय। आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 (हिंदी संस्करण)। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2026।
6. भारतीय रिज़र्व बैंक। वार्षिक प्रतिवेदन 2024-25 (हिंदी संस्करण)। मुंबई: भारतीय रिज़र्व बैंक, 2025।
7. नीति आयोग। विकसित भारत-2047 : दृष्टि दस्तावेज़। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2023।
8. सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय (MOSPI)। राष्ट्रीय आय सांख्यिकी (National Accounts Statistics)। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2025।
9. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय। विदेश व्यापार वार्षिक प्रतिवेदन। नई दिल्ली: भारत सरकार, 2025।
10. भारतीय आर्थिक संघ। भारतीय आर्थिक संघ की सम्मेलन कार्यवाही एवं शोध पत्र। 2023-2025
11. Sen, A. (1999). Development as Freedom. Oxford University Press.

12. Bhagwati, J. (2004). In Defense of Globalization. Oxford University Press.
13. Schumpeter, J. A. (1934). The Theory of Economic Development. Harvard University Press.
14. World Bank. (2025). India Development Update.
15. International Monetary Fund (2025). India: Article IV Consultation Report.
16. Reserve Bank of India. (2025). Annual Report.

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार